श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम्||20||

श्रुतज्ञान मतिज्ञान पूर्वक होता है। वह दो प्रकार का, अनेक प्रकार का और बारह प्रकार का है||20||

श्रुत ज्ञान

मतिज्ञान से जाने हुए पदार्थ का अवलम्बन कर अन्य पदार्थ का ज्ञान

श्रुतज्ञान

अंगप्रविष्ट	अंगबाह्य
12 भेद	अनेक भेद
(द्वादशांग)	(सामायिकादि 14 प्रकोर्णक)

श्रुतज्ञान

अनक्षरात्मक (लिंगज)

लिंग (चिह्न) से उत्पन्न

अक्षरात्मक (शब्दज)

अक्षर, पद, छंदादि शब्दों से उत्पन्न

	अनक्षरात्मक	अक्षरात्मक
स्वामी	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक	सिर्फ पंचेन्द्रिय
प्रमुखता	इससे कुछ व्यवहार प्रवृत्ति नहीं, इसलिए प्रमुख नहीं	सर्व व्यवहार (लेन-देन, शास्त्र पठनादि) का मूल इसलिए प्रमुख
उदाहरण	शीतल पवन का स्पर्श हुआ :– शीतल पवन का जानना - मतिज्ञान ये वायु की प्रवृत्ति वाले को हितकारी नहीं - श्रुतज्ञान	"जीव अस्ति" :– ऐसा शब्द सुना - मतिज्ञान जीव पदार्थ का ज्ञान हुआ - श्रुतज्ञान

अन्य प्रकार से श्रुत ज्ञान के भेद

श्रुत(अक्षरात्मक) ज्ञान

द्रव्य श्रुत	भाव श्रुत
पुद्गल द्रव्य स्वरूप वर्ण, शब्द, वाक्य, पद द्रव्य श्रुत है | जिनवाणी द्रव्य श्रुत है |	द्रव्य श्रुत के सुनने से उत्पन्न हुआ जो ज्ञान है वह भावश्रुत ज्ञान है |

मतिज्ञान और श्रुतज्ञान में अंतर

मतिज्ञान	श्रुतज्ञान
मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम निमित्त	श्रुतज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम निमित्त
दर्शनोपयोग पूर्वक होता	मतिज्ञानोपयोग पूर्वक होता
मतिज्ञान के बाद श्रुतज्ञान होने का नियम नहीं	श्रुतज्ञान के पहले मतिज्ञान नियम से होता है, श्रुत पूर्वक भी श्रुत होता है

मतिज्ञान और श्रुतज्ञान में अंतर

मतिज्ञान	श्रुतज्ञान
३३६ भेद है	२ भेद है
तत्त्व सुना - समझा जा सकता है	तत्त्व निर्णय इसके माध्यम से होता है
पाँचों इन्द्रियों का निमित्त मुख्य है	सैनी जीवों को मन की मुख्यता है

प्रस्तुतकर्ता
- प्रकाश
और पूजा
छाबडा,
इन्दौर

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम्।।21।।

भवप्रत्यय अवधिज्ञान देव और नारकियों क होता है।।21।।

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।।22।।

क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान छह प्रकार का है, जो शेष अर्थात् तिर्यंचों और मनुष्यों क होता है।।22।।

अवधिज्ञान

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव
को मर्यादा लिये रूपी पदार्थों
को स्पष्ट जानना

अवधिज्ञान

भवप्रत्यय

नरकादि भव ही जिसका कारण है

गुणप्रत्यय

सम्यग्दर्शन विशुद्धि आदि गुण जिसका कारण है

गुणप्रत्यय अवधिज्ञान के 6 भेद

अनुगामी	अन्य क्षेत्र / भव में साथ जाए
अननुगामी	अन्य क्षेत्र / भव में साथ न जाए
वर्धमान	बढता हुआ
हीयमान	घटता हुआ
अवस्थित	न घटे, न बढ़े
अनवस्थित	घटता-बढ़ता रहे

अनुगामी

क्षेत्रानुगामी	भवानुगामी	उभयानुगामी
अन्य क्षेत्र में गमन करने पर भी नष्ट ना हो ।	भव के बदलने पर भी नष्ट ना हो ।	क्षेत्र और भव के बदलने पर भी नष्ट ना हो ।

ऐसे ही अननुगामी पर लगाना ।

अवधिज्ञान

देशावधि	परमावधि	सर्वावधि
भवप्रत्यय, गुणप्रत्यय	गुणप्रत्यय	गुणप्रत्यय

परमावधि और सर्वावधि
के स्वामी
नियम से उसी भव में
मोक्ष जाते हैं।